लखनऊ • गुरुवार • 28 जून 2012 हिन्दुस्तान

किसानों तक पहुंचे विकसित गन्ना तकनीक

लखनऊ। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के सहायक उप महानिदेशक डॉ एन गोपालाकृष्णन ने बुधवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान का निरीक्षण किया।

उन्होंने विकसित गन्ना तकनीकों और नवीन प्रयासों को किसानों तक पहुंचाने पर बल दिया। डॉ एन गोपालाकृष्णन ने संस्थान के निदेशक डॉ सुशील सोलोमन और वैज्ञानिकों के साथ विचार-विमर्श किया। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ एके शाह ने कहा कि वर्ष 2012 में संस्थान चीनी उद्योग के कई समूहों के साथ मिलकर साझा कार्यक्रम चला रही है। जिससे गन्ना उपज और चीनी उत्पादन दोनों में अपेक्षित वृद्धि के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। कासं

the pioneer
LUCKNOW THURSDAY | JUNE 28, 2012

ICAR ADG discusses problem of low cane yield with IISR scientists

DR GOPALAKRISHNAN VISITED AN EXPERIMENTAL FARM, A TECHNOLOGY CAFETERIA AND LABORATORIES TO PRIORITIZE THE IISR TECHNOLOGY

PIONEER NEWS SERVICE

Dr N Gopalakrishnan, ADG, Indian Council for Agricultural Research (ICAR), New Delhi, Government of India, on Wednesday interacted and intermingled with the scientists of IISR (Indian Institute of Sugarcane Research).

He discussed with Director, IISR, S Solomon, in detail the new initiatives and remunerative technologies developed by the institute to address the largely prevalent problem of low sugarcane yield and low production of sugar in sugar mills of western UP, which is supposed to be its sugar bowl.

Dr Gopalakrishnan visited an experimental farm, a technology cafeteria and laboratories to prioritize the IISR technology on the basis of their feasibility and viability for the purpose of their immediate dissemination among cane growers and sugar industry.

The ones suggested were wheat inter cropping with sugarcane to overcome the problem of late planting in western UP, cane nod technology for reducing huge sugarcane seed requirement, easy transportation of sugarcane seed material, the rapid multiplication of newly released varieties etc.

The bud chip technique for fast multiplication of seed material and enhanced plant population in the field, deep-tillage technique for enhanced microbial activity in soil and deeper growth of roots, wide-row spacing to facilitate mechanisation, ring-pit planting for higher sugarcane yield and sugar recovery, bio-intensive management of top borer and white grub etc were appreciated by Dr Gopalakrishnan.

He emphasised on the field outreach activities for dissemination and transfer of these remunerative technologies to the farmers.

On the occasion Dr Solomon presented details on new initiatives taken by the IISR to achieve Excellence-2012 and collaborative efforts with sugar industry for the well-being of the sugar industry and canegrowers ie "all is well."

A Senior Scientist at IISR, Dr AK Sah, said that during this year the IISR had initiated many collaborative programmes with sugar mills of UP to address the issues of low sugarcane yield and sugar recovery in UP and desirable results were expected in the years to come.

अमर उजाला लखनऊ | बृहस्पतिवार 28 जून 201

किसानों व चीनी उद्योगों तक पहुंचाएं नई तकनीक

लखनऊ। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक उप महानिदेशक डॉ. एन. गोपालकृष्णन ने भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित नई गन्ना तकनीक की सराहना करते हुए इसे किसानों तक पहुंचाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा, नई तकनीक किसानों के साथ-साथ चीनी उद्योग के लिए भी लाभप्रद है इसलिए इस दिशा में ठोस प्रयास किए जाएं।

8 | दैनिक जागरण लखनऊ, 28 जून 2012

चीनी उद्योग की खस्ता हालत पर चिंता जताई

जागरण संवाददाता, लखनऊ : गन्ना किसानों की सीमित आय व कम चीनी उत्पादन के कारण पश्चिमी उत्तर प्रदेश के चीनी उद्योग की खस्ता हालत पर भारतीय कृषि अनुसधान परिषद ने चिंता व्यक्त की है। इसी सदर्भ मे परिषद के उपनिदेशक डॉ. एन गोपालाकृष्णन ने बुधवार को भारतीय गन्ना अनुसधान सस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन व वरिष्ठ वैज्ञानिको से चर्चा की।

कैनविज टाइम्स
2 गुरुवार, 28 जून, 2012

गन्ना तकनीकों को किसानों तक पहुंचाएं: गोपालाकृष्णन

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान ने वर्ष-2012 को उत्कृष्ट वर्ष मनाने का जो संकल्प लिया था, यह साकार होता दिख रहा है, यह बात बुधवार को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के सहायक उपमहानिदेशक डॉ. एन गोपालाकृष्णन ने कही। वह भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के एक दिवसीय दौरे पर आए थे। इस दौरान उन्होंने वैज्ञानिकों से संस्थान में किए जा रहे कार्यों की जानकारी भी ली।

डॉ. गोपालकृष्णन ने गन्ना किसानों की कम आय और गिरते चीनी उत्पादन के कारण पश्चिमी उत्तर प्रदेश के चीनी उद्योग की खस्ता हालत पर संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन व अन्य वैज्ञानिकों के साथ गहन विचार-विमर्श किया। उन्होंने संस्थान द्वारा विकसित गन्ना तकनीकों तथा नवीन प्रयास को नजदीक गहनता से जानकारी भी ली। संस्थान के शोध प्रक्षेत्र, प्रयोगशाला तथा तकनीकी पार्क का भ्रमण करते हुए उन्होंने संस्थान द्वारा विकसित गेंहू-गन्ना सहफसली प्रणाली, केन-नोड तकनीक सिंचाई जल बचत के लिए गन्ना में ड्रिप द्वारा सिंचाई, बड-चिप तकनीक द्वारा पौध सघनता एवं बीज संवर्धन में वृद्धि, गहरी-जुताई मशीन का उपयोग कर गन्ना जड़ों के विकास में वृद्धि, गड्ढा बुवाई द्वारा उपज एवं चीनी परता में बढ़ोतरी, नाशीकीटों का जैव -विधि द्वारा प्रबंधन, पेड़ी प्रबंधन, मशीन द्वारा पेड़ी गन्ना का लाभकारी खेती आदि के बारे में भी जानकारी ली।

इन तकनीकों को किसानों और चीनी उद्योग के लिए बेहद फायदेमंद बताते हुए तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने के लिए आवश्यक कदम उठाने को कहा। उत्कृष्ट वर्ष-2012 में संस्थान द्वारा किए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों पर प्रकाश डालते हुए निदेशक सोलोमन ने चीनी उद्योग तथा किसानों की बेहतरी के लिए संस्थान द्वारा हर सम्भव प्रयास करने की प्रतिबद्धता को दोहराया। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एके शाह ने बताया कि वर्ष 2012 में संस्थान चीनी उद्योग के कई समूहों के साथ मिलकर साझा कार्यक्रम चला रहा है, जिससे गन्ना के पैदावार बढ़ने के साथ-साथ उसमें चीनी की मात्रा भी ज्यादा हो।